अमीरे अहले सुन्नत ﷺ की किताब "नेकी की दा'वत" से लिये गए मवाद की दूसरी क़िस्त

ख़ौफ़नाक जानवर

कुल सफ़हात 17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ख़ौफ़नाक जानवर

येह रिसाला **(ख़ौफ़नाक जानवर)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़्हा 49 ता 65 से लिया गया है।

ख़ौफ़नाक जानवर

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : "**ख़ौफ़नाक जानवर**" पढ़ या सुन ले उस के दिल को दुन्या के ख़ौफ़ से ख़ाली कर के अपने ख़ौफ़ से भर दे और उस को बे हिसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : बेशक बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जो मुझ पर सब से ज़ियादा दुरूद भेजे। (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ٤٨٤)

जो ख़ुद खाओ पहनो वोही ख़ुद्दाम को भी दो : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 246 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब, "**मुन्तख़ब ह़दीसें**" सफ़्हा 156 ता 160 पर गाली के सुदूर और इस पर नदामत वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ दिये गए मज़्मून से कुछ हिस्सा बित्तसर्रुफ़ पेश किया जाता है, सुनिये और इस में से ख़ूब ख़ूब ईमान अफ़रोज़ **म-दनी फूल** चुनिये चुनान्चे **बुख़ारी** शरीफ़ में है : ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से "रबज़ा" (नामी मक़ाम जो कि मदीने शरीफ़ से तीन मन्ज़िल दूर है) में मुलाक़ात की, वोह और उन का ग़ुलाम एक ही जैसा जोड़ा पहने हुए थे तो मैं ने इस के बारे में उस से सुवाल किया तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं ने एक शख़्स से झगड़ा किया और उस को मां के ह़वाले से बुरा कहा तो हुज़ूरे पुरनूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि ऐ अबू ज़र ! तुम ने उस की मां की निस्बत बुरे अल्फ़ाज़ कहे तुम ऐसे आदमी हो कि तुम्हारे अन्दर जाहिलिय्यत की ख़स्लत है। तुम्हारे

लौंडी गुलाम तुम्हारे (दीनी) भाई हैं, **अल्लाह** तआला ने इन लोगों को तुम्हारा मा तहत बना दिया है तो जिस का भाई उस के मा तहत हो, उस को चाहिये कि जो खुद खाए उस को खिलाए और जो खुद पहने उस को पहनाए और तुम उन ख़ादिमों को ऐसे कामों की तक्लीफ़ मत दो जो उन्हें लाचार कर दे और अगर तुम ऐसी तक्लीफ़ दो (या'नी कोई मशक़्क़त का काम दो) तो खुद भी काम में इन की मदद करो । (صحیح بخاری ج ۱ ص۲۳ حدیث۳۰)

अ़ज़ीमुश्शान नदामत और अनोखा कफ़्फ़ारा : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जिस शख़्स को ग़लत अल्फ़ाज़ कहे थे, वोह हज़रते सय्यिदुना **बिलाले** हबशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं। वोह अल्फ़ाज़ مَعَاذَاللّٰه कोई मुरव्वजा गन्दी गाली नहीं थी, बस इतना कह दिया था कि (ऐ काली मां के बेटे) हज़रते सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब दरबारे रिसालत में इस की शिकायत की तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को डांटा और नसीहत फ़रमाई । इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर इस का क्या रद्दे अ़मल हुवा, येह बहुत ही लरज़ा बर अन्दाम कर देने वाली दास्तान है, इस को सुनिये और खुदा عَزَّ وَجَلَّ के ख़ौफ़ से लरज़िये : चुनान्चे दरबारे रिसालत की मलामत सुन कर फ़ौरन ही हज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र ग़िफ़ारी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना **बिलाले** हबशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िदमत में नदामत के साथ हाज़िर हुए और एक दम अपना हसीन रुख़्सार (या'नी गाल) ज़मीन पर रख कर इन्तिहाई लजाजत के साथ रोते और गिड़गिड़ाते हुए कहा : **"ऐ बिलाल !** जब तक तुम अपने क़दम के तल्वे से मेरे इस रुख़्सार (या'नी गाल) को न रौंदोगे मैं उस वक़्त तक अपना येह चेहरा हरगिज़ हरगिज़ ज़मीन से नहीं उठाऊंगा ।" हज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र ग़िफ़ारी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के शदीद इस्रार से मजबूर हो कर हज़रते सय्यिदुना **बिलाल** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बा दिले ना ख़्वास्ता अपना क़दम सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मुबारक चेहरे पर रख कर फ़ौरन ही हटा लिया और हज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र ग़िफ़ारी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मुआफ़ कर दिया । (ارشادُالسّاری ج ۱ ص۱۹۷)

www.dawateislami.net

अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ पैकरे परहेज़ गारी थे : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ल्लामा क़स्त़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی ने इस वाक़िए के बारे में येह भी तह़रीर फ़रमाया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू ज़र ग़िफ़ारी** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आ़र (या'नी ग़ैरत) दिलाने वाली बात ह़ज़रते सय्यिदुना **बिलाले** ह़बशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के लिये उस वक़्त कही थी जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ की ह़ुरमत (या'नी ह़राम होने) का इ़ल्म नहीं हुवा था । वरना ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसे पैकरे तक़्वा व परहेज़ गारी से ऐसी बात का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता । इसी लिये **ह़ुज़ूरे पुरनूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ येह लफ़्ज़ कह कर उन की सर-ज़निश (या'नी मलामत) फ़रमाई कि "तुम्हारे अन्दर अभी जाहिलिय्यत की ख़स्लत बाक़ी है ।" और येह ज़ज्र व तौबीख़ (या'नी डांट डपट) भी उन के बुलन्द मरातिब की वजह से हुई कि इतने बड़े आदमी की ज़बान से इतनी छोटी और गिरी हुई बात नहीं निकलनी चाहिये थी । (ایضاً)

सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की इस्तिक़ामत : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ही क़दीमुल इस्लाम सह़ाबी हैं, यहां तक कि बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का क़ौल है कि इस्लाम क़बूल करने में बाहरी (ग़ैर ह़िजाज़ी) सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अन्दर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का पांचवां नम्बर है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुसल्मान होने का पूरा ह़ाल **बुख़ारी** शरीफ़ में मुफ़स्सल मज़्कूर है । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ईमानी जज़्बे का ह़ाल येह था कि क़बूले इस्लाम के बा'द चन्द दिन तक बुलन्द आवाज़ से रोज़ाना मज्मए कुफ़्फ़ार में अपने इस्लाम का ए'लान फ़रमाते और कुफ़्फ़ारे मक्का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर पिल पड़ते और इस क़दर ज़दो कोब या'नी मारपीट करते कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लहू लुहान हो कर बेहोश हो जाते मगर जूं ही होश में आते फिर अपने इस्लाम का ए'लान फ़रमाते । (मुन्तख़ब ह़दीसें, स. 157) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ख़ुदाया ब ह़क़्क़े बिलालो अबू ज़र मुझे दीन पर इस्तिक़ामत अ़त़ा कर
इलाही न कुछ पूछना रोज़े मह़शर मुझे बख़्श बहरे बिलालो अबू ज़र
इलाही बराए बिलालो अबू ज़र
मुझे ख़ुल्द में दे जवारे पयम्बर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ियामत के क़रीब एक ख़ौफ़नाक जानवर निकलेगा : **बराए** करम ! नेकी की दा'वत की **अहम्मिय्यत** को समझने की कोशिश कीजिये । जब क़ियामत क़रीब आ जाएगी तो लोग नेकी की दा'वत तर्क कर देंगे, उन की इस्लाह़ की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी । **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 712 पर पारह 20 **सू-रतुन्नम्ल** की आयत नम्बर 82 में रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अ़ज़ीम है :

وَ اِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿۸۲﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जब बात उन पर आ पड़ेगी हम ज़मीन से उन के लिये एक **चौपाया** निकालेंगे जो लोगों से कलाम करेगा इस लिये कि लोग हमारी आयतों पर ईमान न लाते थे ।

बात करने वाला अ़जीब शक्ल का जानवर : **ह़ज़रते** सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी उन पर ग़-ज़बे इलाही होगा और अ़ज़ाब वाजिब हो जाएगा और हुज्जत पूरी हो चुकेगी, इस त़रह़ कि लोग اَمْرٌ بِالْمَعْرُوف وَ نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना) तर्क कर देंगे और उन की दुरुस्ती की कोई उम्मीद बाक़ी न रहेगी या'नी क़ियामत क़रीब हो जाएगी और उस की अ़लामतें ज़ाहिर होने लगेंगी और उस वक़्त तौबा नफ़्अ़ न देगी । **मज़ीद** फ़रमाते हैं : उस चौपाए को **दाब्बतुल अर्द़** कहते हैं, **येह अ़जीब शक्ल का जानवर** होगा जो कोहे सफ़ा (वाक़ेअ़ **मक्कतुल मुकर्रमा**

www.dawateislami.net

(زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا) से बर आमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा, फ़साहत के साथ कलाम करेगा, हर शख़्स की पेशानी पर एक निशान लगाएगा, ईमानदारों की पेशानी पर अ़साए मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से नूरानी ख़त़ (या'नी रोशन लकीर) खींचेगा, काफ़िर की पेशानी पर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगुश्तरी (या'नी अंगूठी) से सियाह मोहर लगाएगा । **मज़ीद** फ़रमाते हैं : और ब ज़बाने फ़सीह़ (या'नी साफ़ अल्फ़ाज़ में) कहेगा : هٰذَا مُؤْمِنٌ وَّ هٰذَا كَافِرٌ (या'नी) येह मोमिन है और येह काफ़िर है । **मज़ीद** फ़रमाते हैं : या'नी क़ुरआने पाक पर ईमान न लाते थे, जिस में बअ़्स (या'नी क़ियामत में उठाए जाने) व ह़िसाब व अ़ज़ाब व ख़ुरूजे **दाब्बतुल अर्द़** (या'नी चौपाया निकलने) का बयान है ।

जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा : **मक्की** म-दनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते हुए **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ने के तअ़ल्लुक़ से निहायत दिलरुबा अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाई । चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना जरीर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है, नबियों के सरवर, मदीने के ताजवर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हम से फ़रमाया : मैं तुम्हारे सामने **सू-रतुत्तकासुर** पढ़ता हूं तुम में से **जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा** । चुनान्चे सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसे पढ़ा । हम में से कुछ तो रोए और कुछ न रोए । जो नहीं रो सके थे उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम ने रोने की कोशिश की मगर न रो सके । सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मैं तुम्हारे सामने इसे दोबारा पढ़ता हूं जो रोएगा, उस के लिये **जन्नत** होगी और जो न रो सके वोह रोने की सी शक्ल ही बना ले । (نوادرُالاصول ج۱ص۶۱۱حدیث۸۶۲)

क़ाबिले रश्क म-दनी मुन्ना : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में हमारे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निहायत अछूते अन्दाज़ में **नेकी की दा'वत** देने का रिक़्क़त अंगेज़ बयान है । इस रिवायत से मा'लूम हुवा कि मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से जिसे चाहें

www.dawateislami.net

जो चाहें इनायत फ़रमा दें, जभी तो फ़रमाया : **"जो रोएगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।"** इस रिवायत में क़ुरआने करीम के आख़िरी पारे की 8 आयतों पर मुश्तमिल **सू-रतुत्तकासुर** का तज़्किरा है, जिस के पढ़ने वाले को एक हज़ार आयतें पढ़ने का सवाब मिलता है, इस में क़ब्र व आख़िरत और जहन्नम का इन्तिहाई लरज़ा ख़ैज़ बयान है, काश ! हम कन्ज़ुल ईमान से इस का तरजमा ज़ेहन नशीन कर लें और जब भी येह सूरत पढ़ें या सुनें ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना नसीब हो जाए । आइये ! इस सूरत के ह़वाले से एक ऐसे **म-दनी मुन्ने की पुरसोज़ ह़िकायत** सुनते हैं, जिस ने अ़-मली त़ौर पर ख़ौफ़े ख़ुदा भरी **नेकी की दा'वत** दे कर हर एक को ह़ैरत में डाल दिया ! चुनान्चे एक बुज़ुर्ग ने किसी मद्रसे के बाहर एक म-दनी मुन्ना देखा जो खड़ा रो रहा था । इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उस ने बताया, हमारे उस्ताज़ साह़िब ने आज के सबक़ में तख़्ती पर बा'ज़ आयाते करीमा लिखवाई हैं, जो मुझे रुला रही हैं, येह कहते हुए उस ने तख़्ती आगे बढ़ा दी । उस में लिखा था :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ
الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ﴿۳﴾ ثُمَّ
كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ﴿۴﴾ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ
عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ﴿۵﴾ (پ۳۰، التکاثر:۱تا۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला । तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़-लबी ने यहां तक के तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा । हां हां जल्द जान जाओगे । फिर हां हां जल्द जान जाओगे । हां हां अगर यक़ीन का जानना जानते तो माल की **मह़ब्बत** न रखते ।

म-दनी मुन्ना बराबर रोए जा रहा था, वोह बुज़ुर्ग उस की येह रिक़्क़त देख कर बेह़द **मु-तअस्सिर** हुए और फ़रमाने लगे : बेटा इस सूरत का सबक़ यहां तक पूरा नहीं हो जाता बल्कि आगे भी है, जो शायद तुम्हें कल दिया जाए । येह कहते हुए उन्हों ने **सू-रतुत्तकासुर** की बक़िय्या आयाते करीमा भी सुना दीं जो येह हैं :

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (کنزالعمال)

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝ (پ۳۰، التکاثر:۶تا۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे । फिर बेशक ज़रूर उसे यक़ीनी देखना देखोगे । फिर बेशक ज़रूर उस दिन तुम से ने'मतों से पुरसिश होगी ।

म-दनी मुन्ना जहन्नम का तज़्किरा सुन कर थर्रा उठा, कांपता हुवा गिरा और तड़पने लगा और पछाड़ें खा खा कर ठन्डा हो गया । उस का उस्ताज़ लपक कर आया और उस ने उन बुज़ुर्ग को पकड़ लिया । लोग इकठ्ठे हो गए, मर्हूम म-दनी मुन्ने के मां बाप भी आ पहुंचे । उन बुज़ुर्ग को बतौरे क़ातिल अ़दालत में पेश कर दिया गया । क़ाज़ी साहिब ने उन बुज़ुर्ग से सफ़ाई त़लब की तो उन्हों ने सारा मा-जरा कह सुनाया । येह सुन कर क़ाज़ी साहिब ने फ़रमाया : येह **म-दनी मुन्ना** इन्तिहाई सआ़दत मन्द था और ख़ौफ़े इलाही عَزَّوَجَلَّ की तलवार से शहीद हुवा है । उन बुज़ुर्ग को बा इ़ज़्ज़त बरी कर दिया गया । (مُلَخص از نزْهَةُالمجالِس ج ۲ ص۹۴) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

म-दनी मुन्ने के ख़ौफ़े ख़ुदा पर फ़िदा, सुनते ही आयतें ढेर जो हो गया
काश ! मिल जाए मुझ को भी ऐसी विला, मेरे मरने का बाइ़स हो ख़ौफ़े ख़ुदा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم **ने रोते रोते नेकी की दा'वत दी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ के आ़लम में रोते हुए **नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाने की एक रिक़्क़त अंगेज़ रिवायत मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे **"इब्ने माजह"** की ह़दीसे पाक है : ह़ज़रते सय्यिदुना बराअ बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि हम **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **क़ब्र** के कनारे बैठे और इतना **रोए** कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने अक़्दस (या'नी पाकीज़ा आंखों) से निकलने वाले आंसूओं से मिट्टी नम (या'नी गीली) हो गई। फिर फ़रमाया : इस (**क़ब्र**) के लिये तय्यारी करो।

(سُنَنِ ابن ماجه ج٤ ص٤٦٦ حديث ٤١٩٥)

क़ब्र देख कर सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी गिर्या व ज़ारी फ़रमाते : मीठे मीठे

इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **ख़ौफ़े ख़ुदा से रोते हुए नेकी की दा'वत** इर्शाद फ़रमाई, मेरे मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **क़ब्र** व **ह़श्र** के मुआ़-मलात में हर त़रह़ के अ़ज़ाब से यक़ीनी क़त़्ई त़ौर पर मह़फ़ूज़ी के बा वुजूद **क़ब्र** के ह़ालात की ह़क़ीक़ी मा'रिफ़त (या'नी पहचान) की वजह से ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब इस के तज़्किरे पर रो दिये। **अमीरुल मुअमिनीन** ज़ुन्नूरैन, जामिउ़ल क़ुरआन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान इब्ने अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ क़त़्ई जन्नती होने के बा वुजूद भी **क़ब्र** की ज़ियारत के मौक़अ़ पर आंसू रोक न सकते थे चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 695 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"अल्लाह वालों की बातें"** (जिल्द अव्वल) के सफ़ह़ा 139 पर है : **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ग़ुलाम (ह़ज़रते सय्यिदुना) हानी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) फ़रमाते हैं कि **अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब किसी **क़ब्र** के पास खड़े होते तो इस क़दर **रोते** कि आंसूओं से आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की रीश (या'नी दाढ़ी) मुबारक तर हो जाती। (تِرمِذی ج٤ ص١٣٨ حديث٢٣١٥) **अल मवाइ़ज़ुल अ़स्फ़ूरिया** में इस ह़िकायत को क़दरे तफ़्सील से बयान किया गया है और उस में कुछ यूं भी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना **उ़स्माने ग़नी** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से **क़ब्र** को देख कर बहुत ज़ियादा रोने का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : मुझे अपनी **तन्हाई** याद आ जाती है क्यूं कि **क़ब्र** में मेरे साथ लोगों में से कोई भी न होगा, (फिर **नेकी की दा'वत** के म-दनी फूल इनायत करते हुए) फ़रमाया : जिस के लिये उस की दुन्या क़ैदख़ाना है उस के लिये उस की **क़ब्र** जन्नत और जिस के लिये उस की दुन्या जन्नत

है उस की **क़ब्र** उस के लिये क़ैदख़ाना है, जिस के लिये दुन्या की ज़िन्दगी बतौरे क़ैद थी मौत उस की रिहाई का पैग़ाम है, जिस ने दुन्या में नफ़्सानी ख़्वाहिशात को तर्क किया वोह आख़िरत में पूरा पूरा हिस्सा पाएगा, बेहतर शख़्स वोह है जो कि इस से पहले कि दुन्या इसे छोड़े वोह खुद दुन्या को तर्क कर (या'नी छोड़) चुका हो और अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से मिलने से क़ब्ल उस عَزَّوَجَلَّ से राज़ी हो गया हो। हर शख़्स की **क़ब्र** का मुआ-मला उस की दुन्यवी ज़िन्दगी के मुताबिक़ है या'नी नेकियों में ज़िन्दगी गुज़ारी तो **क़ब्र** में राहतें और अगर बदियां करते हुए मरा तो हलाकतें ही हलाकतें। (موعظۂ حسنہ، ص٦١-٦٢)

किसी की क़ब्र बाग़ और किसी की क़ब्र में आग : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे **क़ब्र** के अन्दरूनी हालात पर ख़ूब ग़ौर फ़रमाया करते हैं और अफ़्सोस ! हम बारहा **क़ब्रें** देखते हैं मगर इब्रत नहीं पकड़ते, काश ! हम भी सन्जी-दगी से ग़ौर करने वाले बनें। बाहर से ब ज़ाहिर यक्सां नज़र आने वाली क़ब्रें अन्दर से एक जैसी नहीं होतीं, किसी की **क़ब्र** अन्दर से गुलो गुलज़ार और बाग़ो बहार होती है जब कि किसी की **क़ब्र** में सुलगती अंगार होती और वोह **क़ब्र** सांप बिच्छूओं का ग़ार होती है और येह भी याद रहे ! **क़ब्र** में अ़क़्ल सलामत रहेगी, लिहाज़ा जो नेक बन्दे ईमान सलामत लिये **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर दुन्या से रुख़्सत होते हैं, वोह बा'दे वफ़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत को पहुंचते हैं और उन के बस मज़े ही मज़े होते हैं मगर गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ार कर **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नाराज़ी के साथ जो लोग मरते और **क़ब्र** में उतरते हैं, उन की बस शामत ही आ जाती है। चूंकि अ़क़्ल व होश सब सलामत होते हैं लिहाज़ा मरने वाले को **क़ब्र** में सब कुछ समझ आ रही होती है, देखने सुनने की कुव्वत ख़त्म होना कुजा मज़ीद बढ़ जाती है और **मुर्दा** बहुत कुछ देख और सुन रहा होता है, उस के दोस्त अह़बाब दफ़्न करने के बा'द उसे वापस जाते साफ़ साफ़ दिखाई दे रहे होते हैं यहां तक कि उन के क़दमों की चाप भी सुनाई दे रही होती है।

www.dawateislami.net

क़ब्र की तन्हाई : सिर्फ़ इतना सोचिये कि गुनाहों के सबब क़ब्र में बिलफ़र्ज़ और कोई अ़ज़ाब न भी हो सिर्फ़ इतना ही मुआ़–मला हो कि बस यूं ही बन्दा घुप अंधेरी **क़ब्र** में तन्हा बन्द पड़ा रहे, ख़ुदा की क़सम ! इस में भी बहुत कुछ इ़ब्रत है, सोचिये तो सही ! उस का वक़्त कैसे पास होगा नीज़ क़ब्र के ऐसे ख़ौफ़नाक अंधेरे और तन्हाई के वह़्शत भरे होशरुबा माह़ोल में गुनहगार इन्सान पर क्या गुज़रेगी ! इस का हर ज़ी शुऊ़र कुछ न कुछ अन्दाज़ा लगा सकता है । येह तो सिर्फ़ एह़सास दिलाने के लिये अ़र्ज़ किया है वरना क़ब्र के ऐसे ऐसे अ़ज़ाबात मन्क़ूल हैं कि सुन कर आदमी के रूंगटे खड़े हो जाएं । चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना मसरूक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقُدُّوس से रिवायत है : जो शख़्स चोरी या शराब ख़ोरी या ज़िना में मुब्तला हो कर मरता है उस पर **दो सांप** मुक़र्रर कर दिये जाते हैं जो उस का गोश्त नोच नोच कर खाते रहते हैं । (كتابُ ذِكر الموت مَع موسُوعَه امام ابنِ اَبِی الدُّنیا ج ٥ص٤٧٦ رقم٢٥٧) **ज़रा** इतना ही ग़ौर कर लीजिये कि सिर्फ़ एक नमाज़ तर्क करने पर या एक बार झूट बोलने पर या एक बार ग़ीबत करने के सबब या एक बद निगाही के बाइ़स या एक बार गाना सुनने या एक फ़िल्म देखने या एक गाली निकालने या एक बार गुस्से से बिला इजाज़ते शर–ई किसी को झाड़ने या एक बार दाढ़ी मुंडाने की सज़ा में अगर पकड़ कर **तंग क़ब्र** के अन्दर घुप अंधेरे और ख़ौफ़नाक तन्हाई में रख दिया जाए तो क्या गुज़रेगी ! यक़ीनन ख़ाइफ़ीन (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरने वालों) के लिये येह तसव्वुर ही लरज़ा देने वाला है । येह तो सिर्फ़ दुन्यवी तसव्वुर है वरना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी की सूरत में मरने के बा'द जिन अ़ज़ाबाते क़ब्र का सामना होगा वोह कौन बरदाश्त कर सकेगा ! "**ह़िल्यतुल औलिया**" में रिवायत है : "जब बन्दा क़ब्र में दाख़िल होता है तो उस को डराने के लिये वोह तमाम चीज़ें आ जाती हैं जिन से वोह दुन्या में डरता था और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से न डरता था ।" (حِلْيَةُ الاولياء ج١٠ص١٢ رقم١٤٣١٨) हम अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अमान चाहते हैं ।

www.dawateislami.net

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 667)

तेरी जवानी कहीं धोके में न डाल दे ! : मश्हूर **वलिय्युल्लाह** ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار ने एक नौ जवान पर इन्फ़िरादी कोशिश कर के उसे **नेकी की दा'वत** देते हुए फ़रमाया : ऐ जवान ! तुझे तेरी जवानी धोके में न डाल दे, कई जवानों ने तौबा में देर कर दी, लम्बी उम्मीद रखी, मौत को याद न किया और कहा : मैं कल या परसों तौबा कर लूंगा, वोह तौबा से ग़ाफ़िल रहे। आख़िर क़ब्र के पेट में चले गए। उन को माल, ग़ुलाम, मां बाप और औलाद ने कुछ नफ़्अ़ न दिया जैसा कि क़ुरआने करीम में पारह 19 **सू-रतुश्शु-अ़राअ** की आयत नम्बर 88 ता 89 में इर्शाद है :

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿۸۸﴾ اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन न माल काम आएगा न बेटे मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे *मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे*
हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे *ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे*
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ल्बे सलीम किसे कहते हैं : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! "क़ल्बे सलीम" या'नी सलामत दिल, इस से मुराद है दिल का बद अ़क़ी-दगियों से पाक होना। **सदरुल अफ़ाज़िल** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इन आयात के तह़्त फ़रमाते हैं : जो शिर्क, कुफ़्र व निफ़ाक़ से पाक हो उस को उस का माल भी नफ़्अ़ देगा जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया हो और औलाद भी जो सालेह़ (या'नी नेक) हो जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है कि जब आदमी मरता

www.dawateislami.net

है उस के अ़मल मुन्क़त़अ़ हो (या'नी रुक) जाते हैं सिवा तीन के, एक स-द-क़ए जारिया, दूसरा वोह माल जिस से लोग नफ़्अ़ उठाएं, तीसरी नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करे । [مُسلِم ص ٨٨٦ حديث ١٦٣١] (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 593)

मीज़ां पे सब खड़े हैं आ'माल तुल रहे हैं
रख लो भरम ख़ुदारा अ़त्तार क़ादिरी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 195)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पांच से मह़ब्बत और पांच से ग़फ़्लत : **ग़फ़्लत** से बेदार करने वाले नेकी की दा'वत पर मब्नी पांच म-दनी फूल मुला-ह़ज़ा हों, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : سَيَأْتِىْ زَمَانٌ عَلٰى اُمَّتِىْ يُحِبُّوْنَ خَمْسًا وَّيَنْسَوْنَ خَمْسًا ۔ मेरी उम्मत पर वोह ज़माना जल्द आएगा कि वोह पांच से **मह़ब्बत** रखेंगे और पांच को भूल जाएंगे

(1) يُحِبُّوْنَ الدُّنْيَا وَ يَنْسَوْنَ الْاٰخِرَةَ दुन्या से **मह़ब्बत** रखेंगे और आख़िरत को भूल जाएंगे

(2) وَيُحِبُّوْنَ الْمَالَ وَ يَنْسَوْنَ الْحِسَابَ माल से **मह़ब्बत** रखेंगे और मुह़ा-सबे को भूल जाएंगे

(3) وَيُحِبُّوْنَ الْخَلْقَ وَيَنْسَوْنَ الْخَالِقَ मख़्लूक़ से **मह़ब्बत** रखेंगे और ख़ालिक़ को भूल जाएंगे

(4) وَيُحِبُّوْنَ الذُّنُوْبَ وَيَنْسَوْنَ التَّوْبَةَ गुनाहों से **मह़ब्बत** रखेंगे और तौबा को भूल जाएंगे

(5) وَ يُحِبُّوْنَ الْقُصُوْرَ وَيَنْسَوْنَ الْمَقْبَرَةَ मह़ल्लात से **मह़ब्बत** रखेंगे और क़ब्रिस्तान को भूल जाएंगे । (مُكاشَفَةُ الْقُلُوب ص ٣٤)

वोह है ऐशो इशरत का कोई मह़ल भी — जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह़ल से तू निकल भी — येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

गाने बाजों से तौबा नसीब हो गई : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रिज़ाए इलाही पाने, दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ जगाने, ईमान की हिफ़ाज़त की कुढ़न बढ़ाने, मौत का तसव्वुर जमाने, ख़ुद को अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से डराने, गुनाहों की आ़दत मिटाने, अपने आप को सुन्नतों का पाबन्द बनाने, दिल में इश्क़े रसूल की शम्अ़ जलाने और जन्नतुल फ़िरदौस में मक्की म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस पाने का शौक़ बढ़ाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, हर माह कम अज़ कम तीन दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के हमराह म-दनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरा सफ़र करते रहिये और **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए रोज़ाना **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की इब्तिदाई दस तारीख़ के अन्दर अन्दर अपने ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाते रहिये। आइये आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक **म-दनी बहार** सुनाऊं : बाबुल इस्लाम ह़ैदरआबाद के एक इस्लामी भाई की तह़रीर का ख़ुलासा है कि मैं दुन्या की रंगीनियों में ज़िन्दगी गुज़ारने वाला एक छेल छबीला नौ जवान था, नमाज़ों से कोसों दूर और सुन्नतों से मह़रूम था, दुन्या की बे शुमार ना ज़ैबा ह़-र-कतों जैसा कि गाने बाजों, फ़िल्मों डिरामों वग़ैरा वग़ैरा की लपेट में था। मेरे म-दनी माह़ोल में आने का सबब कुछ इस त़रह़ बना कि ख़ुश किस्मती से **र-मज़ानुल मुबारक** 1429 सि. हि. ब मुत़ाबिक़ 2008 सि. ई. में **म-दनी चेनल** का आग़ाज़ हुवा और केबल पर इस के म-दनी सिल्सिले जारी हो गए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से मैं ने इन सिल्सिलों को देखा तो मुझे बहुत अच्छे लगे, अब मैं अक्सरो बेशतर म-दनी चेनल ही देखने लगा, एक बार म-दनी चेनल पर सुन्नतों भरा बयान **"काले बिच्छू"** सुनने की सआ़दत नसीब हुई। मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ उठा, मैं ने हाथों हाथ अपने चेहरे पर दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली और म-दनी चेनल पर जब "गानों के 35

कुफ़्रिय्या अश्आ़र" नामी बयान सुना तो मैं ने घबरा कर हाथों हाथ गाने सुनने से भी तौबा कर ली। म-दनी चेनल पर जब बैअ़त करवाई गई तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म** सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِی का मुरीद हो कर क़ादिरी बन गया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी शुरूअ़ कर दी है। करम बालाए करम ! येह तह़रीर पेश करते वक़्त म-दनी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** बाबुल मदीना में दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले माहे **र-मज़ानुल मुबारक** के 30 रोज़ा सुन्नतों भरे ए'तिकाफ़ में शरीक हूं।

म-दनी चेनल सुन्नतों की लाएगा घर घर बहार
म-दनी चेनल से हमें क्यूं वालिहाना हो न प्यार
ऐ गुनाहों के मरीज़ो ! चाहते हो गर शिफ़ा
ऑन करते ही रहो तुम म-दनी चेनल को सदा
इस में इस्यां से ह़िफ़ाज़त का बहुत सामान है
ख़ुल्द में भी दाख़िला आसान है اِنْ شَآءَ اللّٰه

(वसाइले बख़्शिश, स. 605, 606)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नेकी की दा'वत देते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा से रो पड़े : **हमारे** बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن "नेकी की दा'वत" देने का कोई मौक़अ़ हाथ से न जाने देते, अगर राह चलते बल्कि दौराने सफ़र भी मौक़अ़ मिलता तो "नेकी की दा'वत" इर्शाद फ़रमाते चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं कि मैं फ़-सवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के हमराह मुल्के शाम की त़रफ़ जा रहा था कि रास्ते में एक शख़्स लपक कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के सामने आया और सलाम करने के बा'द अ़र्ज़ करने लगा : **"ऐ अबू यूसुफ़ !** मुझे कुछ नसीह़त फ़रमा दीजिये।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه **रो पड़े** और (नेकी की दा'वत पेश करते हुए) फ़रमाया : **ऐ भाई !** बेशक शबो रोज़ का (जल्द जल्द) आना जाना, आप के बदन के घुलने, उ़म्र के ख़त्म होने और हर दम मौत के क़रीब से क़रीब तर होते चले जाने का पता दे रहा है। इस लिये मेरे भाई ! आप को उस वक़्त तक हरगिज़ मुत़्मइन हो कर न बैठ रहना चाहिये जब तक कि अपने **अच्छे ख़ातिमे** का मा'लूम न हो जाए नीज़ येह

पता न चल जाए कि जन्नत में जाना है या कि जहन्नम ठिकाना है ? और येह ख़बर न हो जाए कि आप का परवर दगार عَزَّوَجَلَّ आप के गुनाहों और ग़फ़्लतों की वजह से नाराज़ है या अपने फ़ज़्ल व रह़मत के सबब आप से राज़ी है। **ऐ कमज़ोर इन्सान !** अपनी औक़ात मत भूलिये ! आप का आग़ाज़ एक "नापाक क़त़रा" है जब कि अन्जाम **सड़ा हुवा मुर्दा।** अगर अभी येह नसीह़त समझ नहीं भी आ रही तो अ़न्क़रीब समझ में आ जाएगी जिस वक़्त आप **क़ब्र** में जाएंगे। वहां गुनाहों पर नदामत तो होगी मगर काम न देगी। येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **रोने लगे** और वोह शख़्स भी जज़्बाते **तअस्सुर** से रोने लगा। रावी कहते हैं : उन दोनों को **रोता** देख कर मैं भी **रोने लगा** यहां तक कि वोह दोनों **बेहोश** हो कर गिर गए। (ذَمُّ الْهَوٰى ص٤٣٧ مُلَخصاً)

मुझे सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ दे दे पए ताजदारे ह़रम या इलाही
जो नाराज़ तू हो गया तो कहीं का रहूंगा न तेरी क़सम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किसी को रोता देखो तो रो पड़ो : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن का ख़ौफ़े ख़ुदा ! कि बसा अवक़ात नेकी की दा'वत देते हुए उन्हें ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोना आ जाता था। आज भी अगर नेकी की दा'वत देते हुए ख़ौफ़े ख़ुदा से कोई रो पड़े, रोते हुए बयान करे, रो रो कर दुआ़ करे, तिलावते क़ुरआन या ना'त शरीफ़ सुन कर रो पड़े तो येह उस के लिये बड़ी सआ़दत की बात है। उस को **रियाकार** समझते हुए उस पर हरगिज़ **बद गुमानी** न की जाए कि मुसल्मान पर **बद गुमानी** करना **ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। दूसरों पर बद गुमानी कर के अपने दिल जलाने वालों की ख़ुद अपनी ही बरबादी है, ह़ज़रते सय्यिदुना **मक्ह़ूल** दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : जब किसी को **रोता हुवा** देखो तो तुम भी रो पड़ो और उसे **रियाकार** न समझो, मैं ने एक दफ़्आ़ किसी रोने वाले शख़्स को "रियाकार" तसव्वुर किया तो मैं **एक साल तक रोने से मह़रूम रहा।** (تَنبِيهُ الْمُغْتَرِّيْن ص١٠٧)

www.dawateislami.net

याद नबी में रोने वाला हम दीवानों को
लाख पराया हो वोह फिर भी अपना लगता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रियाकार बे वुक़ूफ़ों का सरदार है : **किसी** को दुआ वग़ैरा में रोता देख कर बिग़ैर वाज़ेह क़रीने के उसे **रियाकार** समझने वाला बेशक गुनहगार और नारे जहन्नम का ह़क़दार है अलबत्ता ख़ुद रोने वाले को 112 बार ग़ौर कर लेना चाहिये कि वोह क्यूं रो रहा है ! अगर **रिया** का शाइबा भी हो तो जब तक इस्लाह़ न हो ले रोने से बाज़ रहे । यक़ीनन **रियाकार बे वुक़ूफ़ों का सरदार है** कि किसी इन्सान को अपनी ज़ात से मु-तअस्सिर करने, उस की त़रफ़ से ता'रीफ़ी कलिमात सुनने की आ़रिज़ी लज़्ज़त पाने, अपने आप को उस की नज़र में नेक बन्दा बनाने की तमन्ना पर कि वोह इस की त़रफ़ ब निगाहे तह़्सीन (या'नी पसन्दी-दगी की नज़र से) देखे और येह दिल ही दिल में लुत़्फ़ अन्दोज़ हो और मह़्ज़ इस मा'मूली सी लज़्ज़त के लिये रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मिलने वाले अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मात को दाव पर लगा देता है और इस की मह़रूमी की इन्तिहा दुन्या में भी येह है कि अक्सर ख़ुद इस फिटकार के ह़क़दार रियाकार को पता तक नहीं चल पाता कि दिखावा कर के जिस की नज़र में नेक बनना चाहता था वोह **मु-तअस्सिर** भी हुवा या नहीं ! बिलफ़र्ज़ वोह **मु-तअस्सिर** हो भी गया और उस ने पीछे से कोई ता'रीफ़ कर भी दी तब भी आ़म त़ौर पर अपने बारे में ता'रीफ़ी कलिमात सुनना कम ही किसी को नसीब होता है ! और अगर किसी ने मुंह पर ता'रीफ़ कर भी दी तो हलाकत ही में इज़ाफ़ा होगा । यक़ीन मानिये ! अगर किसी आहो ज़ारी करने और रोने वाले या इ़बादत का इज़्हार करने वाले के बारे में लोगों को पता चल जाए कि येह **रियाकारी** कर रहा है तो उस से ठीक ठाक बदज़न हो जाएं तो अब ग़ौर कर ले कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सब कुछ मा'लूम है तो ऐसी सूरत में उस عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी किस क़दर शदीद होती होगी !

www.dawateislami.net

आज बनता हूं मुअ़ज़्ज़ज़ जो खुले ह़श्र में ऐब
हाए रुस्वाई की आफ़त में फंसूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 91)

आ'माल ज़ाएअ़ हो जाएंगे : **रियाकारी** से बचने बचाने का जज़्बा बढ़ाने की निय्यत से इस ज़िम्न में बत़ौरे "नेकी की दा'वत" चन्द आयात व रिवायात पेश की जाती हैं। यक़ीनन दुन्या को आख़िरत पर तरजीह़ देने वाले नादान रियाकारों के अ़मल का सवाब **ज़ाएअ़** हो जाएगा। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** के मत़्बूआ़ तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, **"कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"** सफ़ह़ा 418 ता 419 पर पारह 12 **सूरए हूद** आयत नम्बर 15 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे इ़ब्रत बुन्याद है :

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ﴿۱۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : जो दुन्या की ज़िन्दगी और आराइश चाहता हो हम उस में उन का पूरा फल दे देंगे और इस में कमी न देंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि **रियाकारों** को दुन्या में ही उन की नेकियों का बदला दे दिया जाता है और उन पर ज़र्रा भर ज़ुल्म नहीं किया जाता। (تفسیرِطَبَری ج ۷ ص ۱۳)

रियाकारियों से बचा या इलाही बना मुझ को मुख़्लिस बना या इलाही

रिया काराना अ़मल क़बूल नहीं होता : **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 166 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"रियाकारी"** सफ़ह़ा 16 पर है : ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे **नुबुव्वत, मख़्ज़ने** जूदो सख़ावत, पैकरे अ़-ज़-मतो शराफ़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **"अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस अ़मल को क़बूल नहीं करता जिस में राई के दाने के बराबर भी **रिया** (या'नी दिखावा) हो।" (اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج ۱ ص ۳٦ حدیث ۲۷)

दिखावे से मुझ को इलाही बचाना मुझे अपनी रह़मत से मुख़्लिस बनाना

www.dawateislami.net